

DPN 6736

Title : चाणक्य सार संग्रह / CĀNAKYA SĀRA SAṆ' GRAHA

Run. No. 7461

Cat. No.

Micro. No.

Subject *nitiśāstra*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20.7 x 10

Folios 20

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator *Cānaka*

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Together with Nepālabhāṣā
translation

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति चाणक्य सारसंग्रहे प्रथमशतकं समाप्तं ॥

मूलं ॥ इत्येव मूलं वदन् क...
 मूलं सीधार्गं नान्यथा यथा...
 मूलं लोक...
 यास्ये नित्यं यार्गं ॥ ५७ ॥
 साहिनीदलं मयमिह विधियते ॥
 वदन् क्रोधमयति...
 ॥ ५८ ॥
 मायादिमायन...
 नन मा...

20

15

ठरु मेऽसहस्रेण । कोनया कितमत्र निः । मद्रोऽपि विधाय न । किं वै ४ क
 मेऽसह ॥ शिखरो नार्यलात दावत स्त्री । न मे निरुतो हान ता कव नार्यन
 येवानकाव सयुर्न मत्त सधन नयन वै ॥ १३१ ॥ किक निधानि सयुक् ४ स्त्राव
 इन निज मऽपि । यामुल मधेऽपि कवायाना मना गनि ॥ नार्यवा दाव काय
 स्त्राव उडिया रुल मरुव थगा थ साहून नववाना यदु इवन वानका
 व नवयू रुक याद स्त्राद रुय मरुव थं स्त्राव रुल मरुव ॥ १३३ ॥ त
 क्ते नाव सवधेन मधे निर्वयु निधि नाऽमयू कीन समावृत्ति निम्न किमधुना येन
 साखन शस्त्राल उडि विहाव दथा सनिधे यथावर्न श्वया सवि कलि नवि
 य इ इ नवैय वाकन नि निधवाक सवान लूयक जिधा वना मजीव थं ॥ १३४ ॥

10

5

वृद्ध कवुवया विद्या यन रुद्ध वृंय धनी । कार्य कार्यव सीधाय न सा विद्या न वै ॥
 यथित वीर्ये नया विद्या । मादयो रुल स वाग्य धन कार्य यथा गव न स थवि
 धान विद्या मरुव थवन मरुव ॥ १३५ ॥ इन स्त्रा निव मिहादि निम्न रु निव ना थव
 किधु बाजन कठवो मथिगे निरुल निव ॥ इन स वाग्य मिगु संगे रुवा थव
 रु उयो जन वन सकने मरु निरुल ॥ १३६ ॥ रुट वरु मयू थादि इन स्त्रा यिहि
 वान्धवाऽका कावा लखाने शः काल नाय निद्वि ॥ वन स वाग्य निस्त्रान इन स
 वां वधू जन वन समरु वीर्ये नया थं ॥ १३७ ॥ यहा वचन हान सी कर्म ही वा
 यान नऽनिन थाय कना गेस्य रु श्रमा रुग याय थ ॥ उहाम ववन क म सवया
 का निव य वृद्धि रुने गथे नरु स वन लूया थं ॥ १३८ ॥ रुग वृद्धि यिथा ह द

20

15

न्यहाः गलरुक्ता च खानि रूल्यानि युरागे भगवन् नानाधानसस्य प्रसि
 शाहं क्रियुव कवउ सुधमकासी वव धयेगानिरुलरली ॥ १३८ ॥ निरु
 लो कय (वासवा) निरुलाननिवाउने द्वयसंरुक्ता लस्य अग्निविद्युग्निरुला ॥
 कयनया सदा यादा बागीया केवनि द्वयिया गीली ठाकलान ठहावनार्थे ध
 नं निरुलरुनी ॥ १३९ ॥ वलयकुलकाछाहा विद्रुयामविकन्यकां नृपश्विनी
 ननीवस्य वैवाही सहाकली ॥ हुनीर्जन सुकूलसजायनया कन्या विद्रुयी रु
 नसनी विद्रुय नृपिनीरुनसनी नानमठव धमव दध्याहा विद्रुयाय जो
 ॥ १४० ॥ विद्यादयमृगं गार्ह मध्यादयिकोकाक्षर्न नानादयुरुमाविद्या
 कीनलेशकुलादयि ॥ विषस वादसनीं कृमृगहनदास्य कायजोग नृपति

10

5

उधायसवादसनी लूकायमाल नीवयाक वादसनीं उरुमविद्यारुनसा
 मनमाल श्रीकलिरुनसेनीं कीनलेशहनदास्य कायजोग्य ॥ १४१ ॥ कस्यदार्पक
 लेनालि वानाकोनया उरुशकनरुवर्गानीछाकी श्रियः कस्यनिनकना ॥ सुयात्र
 कस्यदार्पमदो वाधिन शुभविनयु नृनाने इव मसेव सीधलिरुनसनीं कृक
 लसमलाकमइ ॥ १४२ ॥ दायायाहि उधायाहि निमुदायाविजकुषू सुकमान
 सयदस्य नालारुवनि कर्कश ॥ दायाहारुनसनीं मकाई मधा उनरुनसनीं म
 धाई गध्याधानसा कामूलयली यानाल कर्कशधनो धी ॥ १४३ ॥ कृमृगं शिली
 नावकि कृमृगं दिनकाजन कृमृगं उधावनिरायो कृमृगं बालगाधिनी ॥ वि
 कृवन्स मेकय कृमृग ॥ यथाकवेनस धनिवजिना उधावनि कीरुनदास क

नाग कृष्ण बालकन स्नाया वनरुनकासी वनरुमृग ॥ १६३ ॥ इत्यरु
 याकृतीवापी ॥ इत्यरुमु कमीयुठ ॥ इत्यरुवसुहनापी ॥ इत्यरुववनीधिये ॥
 इत्यरुहर्ष याकृतिवावनी ॥ (था इत्यरु १६४) इतिरुनकास निनि इत्यरुहर्ष लोको
 उक्ताया ववनी इत्यरु ॥ १६५ ॥ नदीनां काक निश्चिच्छु नानीवावयुनिठगा म
 नूयाध नूयाधारु दशानां यठ निवृति ॥ नदीदकास गंगा (अरु मिशादकास
 (अनिठगारिं ग्वा मनुष्यदकास नाजालिग्वधमा दशदकास (गधाय बाढा
 (अरिं ग्वा ॥ १६६ ॥ यूरुयैठ समाकीर्ण दागीदास समाकूल रायाविनदिनयुसा
 यथावद्यनथागृह ॥ कायक्य मामिमान् सविह याकन योनसनां निनिम
 दानकाव मिपागथै उहर्षे कृ (धं) गुन केया ल्याख ॥ १६७ ॥ सस्रियामवन
 तानां विधानसमनूलेमि नक्षालिदधनिवगा नयात्य कथनपकि ॥ समरु

१०
 ५
 नक्षदकासी (अ) नक्षडलेम ध्वक्याकनन धमदरुदाव ध्वथं विनीन गाउने
 धननकाय ॥ १६८ ॥ कृष्णरुनि कृष्णानि कृष्णकूलरुनने कृष्णकृष्णनेना
 जा नाखुयोना रुनने ॥ कृष्णरुननामिमान कृष्ण भावकली कृष्ण कायन क
 लभावकरी कृष्णनिनाजा भावकरी खून नाज भावकरी ॥ १६९ ॥ कृष्ण दो
 वसरुस्रादि (अ) कृष्णमि ० हियनि १ गृहावानसुगात्यलि मन (दायनिषास
 रु ॥ मिशाया दावडा दालकि ००० उदादने तना उदाकि नाजास कंसकद
 वनिदानयाय कायवायक पुनूवव सनिवन् (था) रीना ॥ १७० ॥ कवय ४
 किन्नयगान् किन्नरु कनि वायसा १० मदाकिन्नजनन जलमयया ४ ॥ यहिउ
 कयनिसी कूमखरु कखन कूमखन मिमान कूमययायक धनकावनक

20

15

10

5

॥ अथातः न गेनानी गीनोवर्धनेवासव ॥ लङ्का मदायक जोग्यल
 की कुलहीनयाक आम्बसन्नि ॥ अथातः मनयाति नि ॥ १८० ॥ यस्याग्याविनूयाही कर्मलीकन रुखिय
 तस वागावकार्य ॥ १८० ॥ यस्याग्याविनूयाही कर्मलीकन रुखिय
 उरुनाहिनवाहीव साजनानरुनाजना ॥ ग्वनक्यानिनि षमिखाक्षना
 साठमालाक कवठिया उरुकुन न्नाययव थथिग्वनिनी जनाधाय म
 पू जनाधाय ॥ १८१ ॥ यस्याग्याविनूयाव रुलानमनूगामिनी निर्यमधू
 मरुस्त्रिव साधियानक्षिया ॥ ग्वनक्यालिस्त्रयि यूनययालनकाव नि
 थंवाकवचनकुलाक कीथयाथीवायमरुथीवाय ॥ १८२ ॥ यस्याग्या
 गृहनिर्वा मनीवयलिगजनि ग्वसीदन्ति गागुडि ममिनीवहिमांग

म्या ॥ ग्वनक्याकंस फिनकिथं न्नाययनी खिवानवृद्धाथं थर्क्या
 मनीद रुनिइरुनरुनी मिगिनखंठवर्धथंरुनी ॥ १८३ ॥ यस्याग्याविनूया
 स्याव मनीवहिगकानिला ॥ वद्वकनस्यगागुनि युक्तयक्यथागशी ॥ ग्व
 नक्याकंसकुन मामथंरुनिश्युशना ॥ ध्यागनोदवृद्धिमानरुनी
 वलायावनुमाथं ॥ १८४ ॥ किंजानिवहुरियुति लाकसंग
 यदानके वलमंकीकुलालीवी यगुविथमनकुली ॥ गलक कायवृद्धायसा
 कसनायविवहनकासी कुलवननयुहनकासी कुमीकायलिग्व ॥ ग्वथाय
 स कुलयाथामविवर्केश्व ॥ १८५ ॥ अकग्यागुययुगा रुलदगावेन
 वशकगाकागावमनयि नयायकिरुविकिया ॥ निनिर्कम दायसक ३

सतुनमुतिरुक्तासाजिम् ॥ १० ॥ लिङ्गाङ्गान् (धा) क्रीयाविकाल लायमहो ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥ अथ वा वरुवोयुता गयामकायदिवयु ॥ यङ्गकाश्चमधेननीन
 न्नामृषत्तुङ्ग ॥ ननक्रीकायदले कदाचिन् क्रीकाय गयाननीवशभा
 धान क्रीमधेयक नील (धा) साङ्कननय ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥
 कमानेनवाकिना दधनेनदनेसधे कृष्णकाकसयथा ॥ कुमागदसिन मन
 नवन समर्क वनदकादहनयने कृष्णका कलभावकाथं धधंशभा ॥
 २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
 कृष्णयथा ॥ कुमासिमान वोदाव नसाकनी युंनय नसाचकीनी सुयुठनीक
 लनयनीनकाथं ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥

विरुवेष्ययिस्तुदः स्वर्गकस्यामहीयने ग्वनक्रयाकाययनि सवक यन
 नि दिनीयव वगासवग्व धननीगा क्रीकाय वृथिवीस स्वर्गकाय ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
 पाययुतासु विरुवय्य सयिगाचकुयायक ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥
 यस्तु निवृतिशाग्ननग्नन वव्यावगासुर्न (धा) युग्वनया ववून योसन
 याननी (धा) ववू (धा) थायसाविस्त्रासुर्न धमिग्वानिनिवृन्वयया वनीरु
 नी धमिग्वानि ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 जिनिर्गनय क्रीकाथीकोनजीवनी ॥ ग्वनक्रीकाथीकोनजीवनी ॥ ग्वनक्रीकाथीकोनजीवनी ॥ ग्वनक्रीकाथीकोनजीवनी ॥
 वान्धेन धमिगा म्वादासरुल धमिगा म्वादासरुल धमिगा म्वादासरुल ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
 जीवगियुगायस्य यस्य धर्मसजीवनि ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥

20

गङ्गा नाल्यद्य यमैरुर्ल ॥ नरुवर्गनके धारवर्ग नगितान मधुययव
 यमकीनायव धारवर्ग उवाधुनयव ॥ दानालिङ्गयिव ॥ विकृतिनयन रुलनाय
 मरुने ॥ ८ ॥ बालवैव दलधर्मो मनिद्यखन्नुकि विगडा रुलानिमयिधकानि
 मास्तर्गवर्नरुवर्ग ॥ बालकस धर्मयाय मास्त्र कनिद्यसैसानसादुने गथंल
 वानसा क्कवसे उजायाथं हासीमायू ॥ ९ ॥ सदकृश्चरुगाधर्मो जाधने
 वरुर्गनय ॥ कृद्दवचरुर्गनुने युमादनरुर्गनु ॥ कृद्दानिरुनकाव धर्ममायू
 ॥ जोधिरुनकाव तथाभायू दृढमरुनकाव ग्यानभायू युमादिरुनकाव द
 हाभाकुरुलरुयू ॥ १० ॥ कृद्दीका गादुगाहामो रुगाकुरुकानसाखिका ॥ ११
 यकीयाकुरुगाकना सार्थयाकजियादुगा ॥ भिमकालकाव कामरुर्गनरुन

15

10

साखेमवासी रुकनया ॥ नूनलकालरुर्गनु गजिदामकासी वियाकना दान
 रुनरुने धारवर्ग कृधनयाखयाकावनया नूनलालरुर्गनु ॥ १२ ॥ दानिद
 बाधिरुखानि वधेनवगमानिव ॥ बगभुलमगानि गकसादानविमिष
 र्ग ॥ पूर्वकमत सासी दान मयाकाकुरुलन दानिदरुयू वधेनरुयू ॥ कृ
 यलिनायू धारुममालकया दानयाय धर्मयाय किलियायमान ॥ १३
 ॥ धूलकाकुं वधानायू वृत्तधुमवज्जुयू गादुगलमनुयधव धर्मवि
 दिरुगा ॥ ग्वनयू धर्ममनन मरुव कृधनीक मनुयवासरुनसा क
 कठथं उरुसरुनसा कनयथ धारुनेवा ॥ १४ ॥ कजिदुर्गनस
 सा ॥ रुजसाधुसमागम ॥ कुरुनमरुनानर्ग अननिरुगा ॥ कृद्दिकसि

5

20

कर्मनिर्णयः ॥ ६ ॥ नात्मा हि देवविद्या विद्या हि देवविद्या । गुरुर्दे-
 वः सर्वदेवागानि यनगर्ववत्कृत्यन ॥ धनदायका मव्यागविय मष्टव
 भवसा या दायका मागसा गध्यमिशिनसमयस कायन इविकथ्यर
 ना ॥ ७ ॥ मनसा चिन्त्यानयत्कार्य वचसानयका मयन । मर्तुलेडवगुत्त
 कार्यसिद्धिश्चजायते ॥ मनसु कायेन नसानु विनयदेवेव । ममिवगान
 वगननयकासमायमर्गेव ॥ ८ ॥ उयकावगुदीर्गेन शकुटा शकु मूर्द्धनि
 । यादलङ्कनकनकन कनकनेवक००की ॥ उदितनानदासी शकुटाया
 दा ॥ उदितनकासीमाथामान गध्य ह्वयानसा कलनकन कल
 नयसी यिकासाथ सुनियूनयनसरुन ॥ ९ ॥ नरुदमिहल (क)

15

10

5

न यावत्कानविययेथत । तथेव मागनकाल हिंया घठ विवाग्भनि ॥ थ
 ववियनिर्देवस शकुहिनसाना वृत्तीकयमाला धनसिहरनदाव वृ
 स्तीकृत्तीनरुर्व गल्लथालाहास धनया गाठरु माथा गाद रुय
 साहने ॥ १० ॥ रुजिहककृक मधूर्नीकनरा वस मधूर्नी
 वदसि काल्यानी लोकाना मधूर्नी छियडा राजिह्वासन यालवचनेस
 कायनरुनका वाकवाचन कायमज्ञानेर्त्त वाकवचन कालकावे
 । लोकश्रुत्यायमानसलुद्धर्न ॥ ११ ॥ जिह्वावसर्गलक्ष्मी जिह्वायमि
 रुवा भवश जिह्वायनलायि जिह्वायमनदीयेर्त्त ॥ लक्ष्मीवसनया
 त जिह्वास मिहवा भव वसनया जिह्वास वरसेयुव जिह्वास

20

15

10

5



20

15

10

5

रुन नायस निर्वमनिमननन वधुमनूया मनिमनाय ॥ १७ ॥ कश्चा
 कानिमिताकावायागमनायवशकस्याहंकावेमभाकि ननिविनामूकमूक ॥ १
 ॥ सिहादेकैवकादेक शिष्यवत्त्वानिकृकृटन वायसात्येनसिष्यकः सुदिग
 ग्राहावयन ॥ सिहयाकेन रुगायुगसिने वोहोनयाकेन रुगा खायाकेन ये
 गायुग कोखयाकेन रुगायुगसिने खिवायाक वृगा गाधूयाकेन खिनायुग
 सने ॥ १८ ॥ ये यरुन कार्यमत्यवो योननः कठुमिहनि सवोलेन वृन कार्य
 सिहादेकै विधियन ॥ कृकार्य अलीरुयागसनी रुननमयास्य निकवेवो
 उरुनयनेन सिहयाकेन सहा ॥ १९ ॥ छुडिनि निसुसियस्य वकवगवधि
 नोननः कार्यकालाययननि साधयन ॥ वोहोन शिष्यसुनी धमकार्यया
 यं मरुगानं वीव छुडिनि गुरुनयादेजाय धमकार्यकोयाय मरुनया

वः कृकार्येनयाय ॥ २३ ॥ यारुमनवयुधंनव सीविरुगंनववधु ॥ तीयमा
 कायारुजीन सिष्यवत्त्वानिकृकृटन ॥ सुधेवनेदनं शकुवोथाधनये सुनीव
 धुतुल्यखने ॥ जिगागमावागो नायेनुकुपेवधरुन ॥ धनेगाखायाके सनेगुन
 ॥ २४ ॥ उरुमेथूनधुदखं कालेचालसंगदे ॥ गृयमादीसंधुधु यवेभिध
 चवाययाग ॥ मिथूनस उरुहय वनसइकार्य वसथव सुनि वधववानन
 यं यमादिहय सुधुलुहय ॥ क्षदागाकोखयाके सनेगुग ॥ २५ ॥ वद्वानि
 याल्यसिधुधुः सुनिधोभीधुवकन ॥ खामिरुकथशूलक्ष यउनभानकोउ
 व ॥ २६ ॥ दलेदार्थ अदिकन मदगकावे विनायन संधुदहय ॥ भीधुदनं भी
 धुन केदनवाय ॥ खामिरुकहय सुनहय धवृगा विनायाकेन सभस
 व ॥ २७ ॥ विधु कमरुकाय भीनाधुवविचनि ॥ सुसीधोहावनिही

७०

१५

१०

५

जीहिसिवाग्रगरुहान ॥ धमयादाकार्य मसिधनोले आसवय मनेव ॥ श्री
 दूषा नायक धाय मनेव दकोन सीकुदुसय थले गाध्याकेन सनेउ ॥
 २१ ॥ विगत्यना ॥ २३ ॥ २४ ॥ का यमुकुर्याद्विवरुडा ॥ रुडयानि विपुसद्योने ज
 यथरुविद्यानि ॥ धनिगागुडा सुनाने धननयने ॥ डाके विवरुडा समरु गेरु
 दाका कुंदनपीव ॥ धर्म्मजयनये मरुव ॥ २६ ॥ क्रमूखोथामनूबाडा ॥ मत्युस
 नकवेनसा ॥ यनस्यना यकानेडा ॥ यूसारुवनी विरुडे ॥ मरुमेरुव हुनीलाक
 न निनथतवनदाको वनसंभाचकव यनस्यनडा ॥ क्रयकानयाठनहुनी सा
 धूजनया विरुडे रुयू ॥ २७ ॥ ॥ कोकलपुथमृवा येवनकि मरुदुर्वी ॥ क्रस
 धिगाविनस्यनि रुमूडा ॥ ०० ॥ वीक्रिडा ॥ भाडु बाग्धन यीथि रुमुडियादवे

रुमूडा ॥ ०० ॥ धनवे निरुसीगारी धर्थावी धमवे निरुनडा वगायू ॥ २०
 ॥ यमनेनिकुहोत यनकेना धिसिदिन ॥ २१ ॥ अक्रवानन गायुके यनादाना धियेथ
 ॥ क्रायनियादधानंदासी सुयाके रुजनये क्रायनिकननेयारुना यूससथी
 नामसी स्वावैभयशुगन सायाक्रियातकूड माकठ लावयादन क्रायनि
 नननयारुना ॥ ३१ ॥ ॥ रुदनशागनीगीरु समसंवाननेवली ॥ क्ररुनयूसनाम
 न सुरुवन्धे शशागने ॥ समरुनरुनदासी विकुनि उगावेन रुनन मनेव
 माकठ मागाल सागन समूडे वी मरुवैधयादा श्रीनामसी ॥ ३२ ॥ य
 रीमनवर्ययीव विनोवचयनस्यव यनिनाक स्यमानन वरीयीवारुन मने
 ॥ यीधिरुि नाडासी रुडाधनगारुडा ॥ रुसकन शक्रिमी कूकिज जिगनि

[illegible][illegible]

20

धनयमानरुत ॥ ४० ॥ किंकुलनविशालन सुवातायुजिननन ॥ धनवस्तुवि
 काशयिनिगुणार्किकनिधनि ॥ किंकुलन कृषयाजन सुगन्धानधाली डाः
 कीलोकनमानियाय धनवसा नाडासकाय थरुन निगुणकहनकावक
 युयाजन ॥ ४१ ॥ किंकुलनविशालन विद्यादिननुयानन ॥ कुकुलिनायिविः
 दासा देवनेवायिपूयर्क ॥ गवन मनुष्य कनवकश्यावकृषयाजन विद्यादि
 नयादन गालुसकाय गथदेवयूजनयाथा यूजनयिव ॥ ४२ ॥ नावाथा
 वरुवेविद्या यावत्याननगकनि डकीपुचगनेयाने नोकयाकृषयाजन ॥ वि
 द्याहर्न नामवाठथिग्व समुदयानयाय मधुगाल नामलागलपिव समु
 यानयाय धून काव नामकृषयाजन ॥ ४३ ॥ गुणासवैगुयुयर्क यित्व

15

10

5

रमानिथक वासुदेवानमस्येति वस्तुदेवाननेजना ॥ किंकुलन सुनवजा
 यार्क वाय कायवायमदा गुणधलदान नावायनवा समस्य यूजायार्क
 गुणमेथालकाव नावायनस नाकाव कर्मनन यूजामयार्क ॥ ४४ ॥ गुणास
 कृष्टेनिहनने इनयिवसगा सता कटकीगन्धमाद्यार्क स्वयंगकनियद्वादा
 ॥ गुणासवैगुयुयर्क थरुने साधुजनवसवने थरुने गायिनवां वसने
 गथे कटकी हानयानेन रुमनहनवने कृष्टीलाकवनीव ॥ ४५ ॥ वि
 द्यावैवनुयवैव नदिगालेयलाजम त्वदेगयुजिनाजा विद्यासवैगुयुयर्क
 नावाजासवा विद्यागालुसवा कृष्टीलायमदा नाजावैवने थवनाई
 स रुका मानियाय यवनाऊस मानिमयाक विद्यासवैगुयुयर्क गनवन
 सना नाजायुजान मानियाय ॥ ४६ ॥ गुणासवैगुयुयर्क विद्यायर्क

20

नसाधुनोऽकलंयुल्लसिदुन वनुनेवयकाश्वने ॥ सुयुगसाधन विद्यावर्क
 साधुयाधन कुलस युनूयसिदुयाध गथंयनुसक्तिनवार्थं किहियका
 सरुयकैः कर्मकायनगात्र ॥ ४१ ॥ विद्याया राजनकर्किविग काश्चत
 नाडवराजन उरुयराजन कश्चित् कश्चित् नारुयराजन ॥ तुलिदिना
 लाकया धनरुद्रा तुलिदिना उवैयाथलरुद्रा तुलिदिना लाकविद्या
 सदा उवदव तुलिदिना लाकविद्या मसव उवमल ॥ ४२ ॥ नमनि
 रुलिनाविद्या का ४ नमनि गणिनाजना ४ उरुकाश्वनमुखरु हिद्यनेव
 मन्त्रे ॥ ससर्वशिन मवूनमस्कात्रमयाक तुनहुनन भवनमस्कात्रमयाक
 मीगसिधरुनमुखलोक धरुन यनवृय मजीव मुखलोक कुरुकानमइ ॥

15

10

5

४० ॥ मरिक्कर्मनिवत्तानि सुधाकारंयथाजगत्प्राप्तनमधुर्ननिडा त
 धाहाधायमवन ॥ धर्वनाजुर्मस सनिवनस मनेव क्राहान मेधुन नि
 डा लायैव्याय धर्मे ॥ ३० ॥ क्राहानाजायनेवाधि गरुक्नथजायने
 कलाक्तेवथ सयाया ४ सयाभादावृषकुर्य ॥ ३१ ॥ वेदावेदागतत्तु जयहे
 मयनायन ॥ आगीतादवियमूमा नाजासिधाहितक ॥ धनयु डाभा
 नदवदांगनगोसव जयहा मजियासव ॥ आगीतादवियमूमा नाजा
 सीधाहितयाव ॥ ३२ ॥ यासुत्तिन्धमहीयान चिडकर्मविवजित वि
 धुनेवयनिगागी समइःखसमसुख ॥ हुनीकामलकिडववन मस्तः ॥
 यनि वनसगागीहव इखसुखकुलखग ॥ धर्मनाजायाय ॥ ३३ ॥ कस्तूरी

20

लघुभाष्यं सद्यधर्मयनायनं पुण्यधर्मयनादका नाजाया कोविदीयनं ॥
 कलवन्क शीलवन्क गुडावन्क सद्यवन्क धामिक वक्रविजकडा कृमा
 वन्क धर्मिग्यर्कनाडायाय ॥ ३४ ॥ कुलवगनिर्नलक नृपगक सदाकैवी
 नृनायवयकलार्न नाधियर्ननियार्क ॥ आधिकाम सनेन लोकि सुनी
 मशव नृनऊवन यव नृसमसासी वययाक थाधैग्य नाजायायम
 यव ॥ ३३ ॥ मूलवृत्तिदि कोविर्न सर्वनलवमिकक ॥ शुविश्वववसायि
 य वमोक्षा कोविदीयनं ॥ ककार्यर्न उकार्यदिन समस्तनलया यनि
 याक शीलवन्क वव सायिवाक क धामिक धाय ॥ ३६ ॥ नृयुवदक
 नास्यासं ४ सर्वेदुःखियदभनं ४ नृयगील गुडावन्क उकवेद्याविदीय

15

10

5

कै २

न ॥ वग्य नृदिन वैश्यासु नृयासयाको नालिरुद विकित्ता सव
 लाकवा दुवे शीलवन्क लहिव गुडावन्क धर्मिग्यसव ॥ ३७ ॥ धिह
 विनामलोदकं गानुसुमिषयावर्क शुविश्वकठिनयेव स्रयकार्कयनल
 न ॥ वाय नृनानिर्सी विवद्याडा गानुसव यात्ररिग्य कथिन मशव ध
 क स्रवानयाय ॥ ३८ ॥ सकृदक गृहिनाथा लघुदलोडिगाकन ४ सर्वे
 सुसमालाकि उद्यः लखकावन ॥ नृकनलकवावेर्क नृकन नृथरैला
 गनव नृकल लिविहिग्य नानागानु नृयासयाक क धर्मिग्यक धाय
 ॥ ३९ ॥ पुण्णिगाकानगडा वलवाधियदभर्न नृधमादीसदादकः ९
 निरानसद्यार्क ॥ कार्यया नृनृयसव कलवन्क लाकवा दुवा यमा

20

15

10

5

सगुणदयु यन स्वयं सखा कश्यु लक्ष्मी वृद्धि शयु ॥ ६१ ॥ मुखो निजा
 यो माने तु उथा दस्ता ॥ मदीय न ॥ कयथा धना गथा नन कय नने कुर्व ॥ मुखे
 योजनया कायस नाजा स खंगा दावन दयु ॥ कय कि हि ला क लक्ष्मी मायु
 यन उत नन की वनी व ॥ ६२ ॥ कस्मा दु मो श्रवा नित्ये धम का मा ध वृद्धय युन
 वन नीया धनं युदा दी न विवा जि न ॥ धन न सन व ना जान धमो ग धमो क
 म वृद्धि या यु युदा वनं क या जन धे मा त्व युन दी न क ना ठ ग ॥ ६३ ॥ यो ली
 वि कु न न ह थ ॥ यु रु वा य दि वा यु र् ॥ न न स व क न ज ना डा सु क र् ॥ इ क र् ॥ ना य
 ॥ यु न व न क या जन या न ध र् ॥ यु रु या क न क यु रु या क न सु क र् ॥ ना य
 द न ना जा स ल क्ष्मी वृद्धि शयु ॥ १० ॥ यथा हि म य नि य क ता य ना ठ न क द न

॥ गथा वृद्धय मय न कु ल शी ल न क म् ॥ गथा लु क् ॥ दा सी ना क ठ न
 य नि द्या या गि अ थै व कु ल द्वा रा व क म् ॥ यु न य य नि द्या या न ॥ ११ ॥ सु
 न र् ॥ वृद्धि ॥ वा न्धे वा य ग ना ग म ॥ क य लो ल ग था मि र् ॥ रा मी ॥ ति रु
 क य ॥ उ गे व न हि ति सो य आ क् ॥ स र् ॥ न र् ॥ ति सो य आ य नि स मि रु
 ति सो य ति य नि स ति रु ति सो य ति रु य म द न दा व ॥ १२ ॥ रु ग ॥ वृद्धि
 ॥ ना जा न उ रु मा धे म म धे ना ॥ ग नि द्या य न था या क् ॥ ति रु य व क म
 म ॥ उ गे व न क म ग वि धि ति रु म ति रु स व ला व न क् ॥ स य ना व न स या ज न य ॥
 ल या ज न य म ति रु क् ॥ म ति रु स व ला व न क् ॥ स य ना व न स या ज न य ॥
 ॥ १३ ॥ क ल सी मुख ल क् ॥ न र् ॥ व श नि न ॥ १० ॥ क स क् ॥ म र् ॥ क व ॥ ला ज क् ॥

20

15

10

5

खननाधिर्य ॥ कूलासिवाययव ऊाधि तद्धीवगानिन रुधिविकान सैतुमहन
 रुकिमहन नाजाली धक्षिन्व उगावन ताउनेमाना ॥ १४ ॥ राऊल्लामिनमध
 लु उमयुल्लकयनसुअत कयनाद विस्यमहु तल्लाज्जेकतनासन ॥ उगीम
 हवहामि ताउनेमाली उगमहनसाभा कयनिजनकाव कार्यया रिगम
 रिग्य मभिनकाव धक्षी नाजालीतुनेमाली धनाजायाकार्यनासरयू ॥ १५
 उ ॥ रामारायोमूगामुखे बुधवकाया निव्वानकः ॥ निवेदावधुवगथा खंडद
 स्यमदमुखे ॥ वियेनिस मनेवलि धखेन ॥ ५ मुखकार्यस धखेन कायाकार्य
 मयाक भामिगा धखेन सनेहा मदा सजेन धखेन धने ताउनेने महे
 ल्मा यूनयया सुखदयू ॥ १६ ॥ नकश्चित्कसाविनिर्गु नकश्चिनकसाविनि

यशकानवादेवजायके मिठगिनिववकथा ॥ मिठदयू कानवा गुरुद
 य कानन मिठवा सजनवा गुरुयू कानन दनकाव ॥ ११ ॥
 कार्यधीरुजतलोक ४ नलाकयवमाध ते ४ वरु कीरकयदुद्धा यानलडा नि
 नावनी ॥ कार्यया नूनसवन लोकरुजनय ॥ ५ मात्ता गथंखीधानसा
 लादानइइमदलेहाद मामताउनेनी ॥ १६ ॥ कृत ४ वगानिनानिडा कूनि
 कस्यकूनीवनि कृत ४ सीखीदनिदस्य उडेनस्यकूनीमा ॥ वागानितनन क्रया
 किदमइ हकिमइ वझीया नतिखेमदा दनिदया सुखमदा उडेनया कूमा
 खेमदा ॥ १७ ॥ तत्कनस्यकूनीमाना उडेनस्यकूनीमा ॥ वेश्माकुलाकूनी
 मदा कूनी ॥ सीमायकामिनी ॥ खूयामानिखेमदा उडेनया कूमाखेमइ